विचार बिन्दु

यदि देश भक्ति का मतलब व्यापक मानव मात्र का हित चिंतन नहीं है तो उसका कोई अर्थ ही नहीं है। - महात्मा गाँधी

धर्म का राग छोड़िये, कर्म करिये, शर्म सीखिये

कभी-कभी एक भजन आकाशवाणी से प्रसारित होता है, जिसकी एक पंक्ति यह है कि 'धर्म भी होगा, कर्म भी होगा पर शर्म नहीं होगी।' लेखक को लगता है कि धर्म और कर्म भी गायब हो गये हैं। धर्म की जो अवधारणा है कि जो धारण किया जाय वह धर्म है, अब तिरोहित हो गई है। धारण क्या किया जाय यह तथाकथित 'धर्मों' में स्पष्ट है। 'परहित', 'मानव कल्याण', 'विश्व बंधुत्व', 'नेकनीयत', स्नेह प्रेम', 'क्षमा', 'मधुरभाषिता' आदि ही तो वे गुण हैं जिन्हें धारण करने की बात सभी धर्मों में कही गई है। नहीं लगता कि किसी भी धर्म में इनके विलोम गुणों को धारण करने की बात कही गई हो। इन सभी को सूत्र रूप में जैन धर्म के पाँच शब्दों में प्रगट कर दिया गया है यथा सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य और अचौर्य। जो सचाई पर चले, कभी हिंसा (तन, मन, धन से) न करे, पैसा अपने स्वार्थ हेतु जमा न करे, व्यभिचार न करे, दूसरे की वस्तु न हड़पे और जीवन में पवित्रता का आचरण करे, वह निश्चय ही सच्चे अर्थों में धार्मिक है, फिर उसकी आस्था कुछ भी हो।

जैन धर्म के पाँच सिद्धांतों को भी अगर एक शब्द में कहा जाय तो है 'इन्सानियत या मानवता'। इसके विपरीत आचरण करने वाले हैवान हैं, दानव हैं। आजकल जो भी व्यक्ति और विशेष रूप से किसी एक धर्म की वकालत करते हुए दूसरे धर्म के प्रति असहिष्णु हैं, वे धार्मिक है ही नहीं? वे ढोंगी है, पाखण्डी हैं। कहना यह चाहिये कि धर्म केवल एक है और मात्र रास्ते या आस्थाएँ अलग-अलग हैं। बिना गहराई तक गये, अपनी आधी-अधूरी जानकारी के आधार पर हम कुछ भी कहते रहते हैं। भारत की ही नहीं समस्त विश्व में 'धर्म' के नाम पर और 'विचारधारा' के आधार पर हिंसा का ताण्डव नृत्य हो रहा है, यह दुर्भाग्यपूर्ण है। कोरिया, वियतनाम, जर्मनी आदि में विचारधारा के आधार पर देश का विभाजन हुआ, शक्तिशाली देशों की सत्ता अथवा वर्चस्व की लिप्सा ने ये विभाजन कराये। भाई-भाई दुश्मन हो गये। कट्टरता और उदारता का एक उदाहरण बोहरा मुस्लिम में 'शबाब और यूथ' शबाब के अलग-अलग समूहों का है। इनमें एक ही परिवार में विग्रह है। सारे विश्व में धार्मिक कट्टरता और उसका उन्माद 'आतंकवाद' का जनक, पालक व पोषक बन रहा है। इनमें से सर्वाधिक क्षति इस्लामिक कट्टरपंथियों द्वारा हो रही है। भारत में हिंदू-मुस्लिम की बात करना सांप्रदायिक कहा जाता हो परंतु विश्व के अधिकांश देशों में जो कोहराम मचा हुआ है वह तो स्वीकार करना ही होगा। कभी एक देश में ईसाई व इस्लाम धर्म का घमासान होता है तो कहीं कट्टर मुस्लिम या इस्लाम व उदार इस्लाम के बीच संघर्ष का कारण बन रहा है। साम्यवादी देश सामान्यत: नास्तिकता अपनाते हैं और अपने विस्तारवाद में अन्यान्य प्रभुता संपन्न देशों पर अधिकार कर वहाँ के धर्म को नष्ट करते हैं। चीन ने तिब्बत में बौद्ध धर्म को विलुप्त करने का पूरा प्रयास किया है। पाकिस्तान व अन्य कट्टरपंथी इस्लामिक देश भारत में हिंदू धर्मावलम्बियों पर आक्रमण कर अथवा भारतीय प्रदेश में अतिक्रमण कर अपनी घृणित मानसिकता का परिचय दे रहे हैं। हिंदू कहें या सनातन धर्म, उसने कभी दूसरे धर्म को नष्ट करने का प्रयास नहीं किया। हाँ, यह अवश्य है कि भारत में जन्मे बौद्ध धर्म का एशिया महाद्वीप के कई देशों में प्रचार-प्रसार हुआ है। परंतु यह शांतिपूर्ण एवं स्वत: स्फूर्त रहा है। यह कहना उचित होगा कि अंग्रेज़ों के शासन में हिंदुओं का ईसाई धर्मांतरण बड़े पैमाने पर हुआ और चोरी-छिपे ईसाई मिशनरियों द्वारा अभी भी हो रहा है। भारत की गरीबी, विस्तृत आदिवासी क्षेत्र व छुआछूत व जातिवाद ने इसे बढ़ावा दिया। मुगलशासन में भी यह धर्मांतरण बड़े पैमाने पर हुआ जिसका अत्यधिक प्रभाव लम्बे मुगल शासन व इस्लामिक आक्रामकता के कारण हुआ। भारत में जातिवाद के साथ धार्मिक सहिष्णुता भी इसके प्रमुख कारण रहे। स्वतंत्रता के बाद पूर्णत: निष्पक्ष रह कर भी यह कहना ही होगा कि मुस्लिम तुष्टिकरण ही नहीं मुस्लिम पक्षपात और प्राथमिकता का दौर रहा और धर्मनिरपेक्षता का स्वांग रचा जाता रहा। भले ही यह सद्भावना से किया गया हो परंतु यह शत प्रतिशत सत्य है कि हिंदू अपने आपको हिंदू कह कर संप्रदायवादी बताये जाने के भय से त्रस्त हो गया।

राष्ट्रीय नेता बनने की चाह रखने वाले एक नेता कहते हैं 'वीर सावरकर' अंग्रेज़ों की गुलामी करना चाहते थे। उनको पता नहीं कि नेहरू, गाँधी सभी पत्रों में इसी तरह लिखा करते थे। वह 'वीर' ही नहीं 'महावीर' सावरकर था जो हमने बचपन से पढ़ा और सुना है।

उल्लेखनीय यह है कि इस भेदभाव के बावजूद मुस्लिम बहुत तरक्की नहीं कर सके विशेष रूप से शिक्षा की दृष्टि से और इसी कारण से पिछड़ेपन, कट्टरता, अंधविश्वास, अंधानुकरण व धर्मांधता के शिकार भी रहे। धीरे-धीरे देश-विदेश के दुष्प्रचार के कारण शिक्षित मुस्लिम वर्ग में धार्मिक कट्टरता आई जैसा कि सुशिक्षित आतंकियों में ज़ाहिर आया है। इस स्थिति की प्रतिक्रिया में धीरे-धीरे हिंदुओं में भी धार्मिक कट्टरता बढ़ती गई परंतु फिर भी वह उस धार्मिक उन्माद की स्थिति में नहीं पहुँची है। वर्तमान केन्द्रीय सरकार ने ऐसा कोई काम नहीं किया जो धार्मिक कट्टरता या पक्षपात का परिचायक हो। जितने भी बड़े काम कर रहे हैं या हुए हैं वे देशहित में व समस्त जनता के हित में हैं। परंतु विपक्ष व अल्पसंख्यक नेता अपनी-अपनी रोटियां सेकने में लगे हैं। आग में घी का काम कर रहा है इलेक्ट्रोनिक मीडिया अनावश्यक बहसबाज़ी आयोजित कर हिंदू-मुस्लिम हिंदू-मुस्लिम चिल्ला-चिल्ला कर विभाजन की रेखाएँ गहरी करते हैं। एक निष्पक्ष व ईमानदार भारतीय तीन तलाक, सी.ए.ए., धारा 570 व 35 ए, ई.बी.सी आरक्षण, सीसीसी आदि में मात्र महिला सशक्तीकरण, समानता व समाधिकार देखता है। विपक्ष ने तो लगभग हर सुधार कार्य एवं कोरोना वेक्सीन जैसे सही कदम को भी धार्मिक संकीर्णता में बदला और निजामुद्दीन मरकज़ पैदा किया, देहली के दंगों का समर्थन किया, जे.एन.यू. में व अन्य स्थानों पर देश विरोधी गतिविधियों का समर्थन किया।

ज्यादातर नेता 'धर्म-धर्म' चिल्लाते रहते हैं। इस चिल्लाहट को तत्काल बंद करने की आवश्यकता है। अरे, धर्म तो यह कहता है कि कर्म करो, सुकर्म करो। अपने आप धर्म का पालन हो जायगा। जो कुरान को मानते हैं, उन्हें यह सोचना चाहिये कि क्या कुरान यह कहती है कि दूसरों का गला काटो, अपनी मतलब परस्ती के कारण आगजनी, तोड़फोड़, बलात्कार करो। लेखक ने कुरान कहीं पढ़ी है, परंतु अच्छे मुसलमान नागरिकों से ही सुना है कि वह भी अच्छे काम करने की, अच्छा इन्सान बनने की, नेक नीयत रखने की, मिल-बैठकर झगड़े निपटाने की, दूसरों के लिये अपनी आमदनी से कुछ बचाने की, हिमायत करती है। वह नापाक और पाक में फर्क़ करती है। जन्नत और जहन्नुम की चर्चा से बुरे कर्म और अच्छे कर्म में भी भेद करती है। बदज़ुबानी करने, बदनीयती रखने, बुरी नज़र रखने, बुराई सुनने और बुराई करने से परहेज सभी मज़हब सिखाते हैं। 'कर्म', 'कार्य' तो सभी करते हैं, महज़ फर्क़ यह है कि सुकर्म हो, सद्कर्म हो, वह कुकर्म व दुष्कर्म न हो। हकीकत यह है कि हम कर्म करते हुए सुकर्म नहीं करके कुकर्म व दुष्कर्म करते हैं और तुर्रा यह कि बेशर्म भी रहते हैं। बेटा माँ-बाप को बात-बात पर आँख दिखाता है, शराब खाने ज़्यादा आबाद हैं बनिस्पत मंदिर-मजिस्द के, अवाम बात-बात पर हुकूमत से उलझता है और हुकूमत में बैठे कई लोग खुद कुकर्मों में मशगूल हैं, बेटियों का शोषण हो रहा है और हम तमाशबीन बने हुए हैं। बदज़ुबानी व बदसलूकी आम बात हो गई है। ज़्यादातर नेता बेशर्म हैं और उससे मेल खाता ज़्यादातर अवाम भी। बेशर्मी की हद यह है कि एक लड़की की हत्या कर पैंतीस टुकड़े करने को एक मुख्यमंत्री एक सामान्य आम घटना, दुर्घटना मानते हैं और कहते हैं कि ऐसा होता रहा है। अरे सवाल यह है कि क्या ऐसा सरकारों की बुजदिली, लापरवाही, और निकम्मेपन से नहीं हो रहा। राष्ट्रीय नेता बनने की चाह रखने वाले एक नेता कहते हैं 'वीर सावरकर' अंग्रेज़ों की गुलामी करना चाहते थे। उनको पता नहीं कि नेहरू, गाँधी सभी पत्रों में इसी तरह लिखा करते थे। वह 'वीर' ही नहीं 'महावीर' सावरकर था जो हमने बचपन से पढ़ा और सुना है। प्रधानमंत्री को 'औकात' दिखाने की बात करने वाले और उन्हें 'नीच' कहने वाले नेता भी हैं। ये नेता धर्म पर हमें लड़ाते हैं, ये धर्माचार्य धर्म के नाम पर हमें उकसाते हैं, ये मज़हब के ठेकेदार मतलब परस्त, बेशर्म होकर नफरत फैलाने का काम करते हैं और हम भी बेशर्म बन कर 'धर्म के नाम पर अच्छा 'कर्म' करने के बजाय बेजा बेशर्म होकर बेजा नाजायज़ और बेहद खराब और गैर जिम्मेदाराना हरकतें करने लगते हैं।

'धर्म', 'धर्म' पर क्यूँ लड़ते हो, शर्म न तुमको आती है।
'कर्म' करो 'सुकर्म' करो, 'गीता' यही सिखाती है।

-अतिथि सम्पादक,
कैलाश विहारी वाजपेयी,
(स्वतंत्र चिंतक व लेखक)

प्रथम राष्ट्रपति राजेन्द्र बाबू के जन्म दिन 3 दिसम्बर 2022 के अवसर पर

सादा जीवन उच्च विचारों के धनी राजेन्द्र बाबू और उनके प्रेरणादायक संस्मरण

राजेन्द्र बाबू का जन्म 3 दिसंबर, 1884 को बिहार के तत्कालीन सारण जिले (अब सीवान) के जीरादेई गांव में हुआ था उनके पिता महादेव सहाय संस्कृत एवं फारसी के विद्वान थे। माता कमलेश्वरी देवी एक धर्मपरायण महिला थीं। मात्र 12 वर्ष की उम्र में उनका विवाह राजवंशी देवी से हुआ। उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय की प्रवेश परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया और 30 रुपये मासिक छात्रवृत्ति प्राप्त की। वर्ष 1902 में प्रसिद्ध कलकत्ता प्रेसीडेंसी कॉलेज में प्रवेश लिया। यहां उनके शिक्षकों में महान वैज्ञानिक जगदीश चंद्र बोस और माननीय प्रफुल्ल चंद्र रॉय शामिल थे। बाद में उन्होंने अर्थशास्त्र में एमए और कानून में मास्टर की शिक्षा पूरी की।

वर्ष 1930 में नमक सत्याग्रह में भाग लिया। वर्ष 1914 में बंगाल और बिहार में आयी भयानक बाढ के दौरान उन्होंने पीडितों की खूब सेवा की। 15 जनवरी, 1934 को जब बिहार में विनाशकारी भूकंप आया, तब वे धन जुटाने और राहत कार्यों में लग गये। वे वर्ष 1934 से 1935 तक भारतीय कांग्रेस के अध्यक्ष रहे। 26 नवंबर, 1949 को संविधान सभा में संविधान को पारित करते समय डॉ. राजेंद्र प्रसाद द्वारा कहे गये शब्द बहुत महत्वपूर्ण हैं।" जो लोग चुन कर आयेंगे, यदि योग्य, चरित्रवान और ईमानदार हुए, तो वे दोषपूर्ण संविधान को भी सर्वोच्च बना देंगे। यदि उनमें इन गुणों का अभाव हुआ, तो संविधान देश की कोई मदद नहीं कर सकता।

उन्हें देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से सम्मानित किया गया। जिन्दगी का अंतिम पडाव में उन्होंने सदाकत आश्रम में बिताया। 28 फरवरी, 1963 को वों पंच महाभूतों में विलीन हो गये। राजेन्द्र बाबू ने अनेको किताबे लिखी अपनी आत्मकथा (1946 बापू के कदमों में बाबू (1954, इण्डिया डिवाइडेड (1946), सत्याग्रह ऐट चम्पारण (1922), गांधीजी की देन, भारतीय संस्कृति व खादी का अर्थशास्त्र इत्यादि उल्लेखनीय हैं।

प्रथम राष्ट्रपति राजेंद्र बाबू और उनके जीवन के प्रेरणादायक संस्मरण : प्रिंसिपल ने एफ.ए. में उत्तीर्ण छात्रों के नाम लिए तो राजेन्द्र प्रसाद का नाम उस सूची में नहीं था। राजेन्द्र प्रसाद को फेल होने पर रत्ती भर भी विश्वास नहीं हुआ क्योंकि उन्हें अपनी एफ.ए की परीक्षा में सर्वोच्च अंकों के साथ उत्तीर्ण होने का पूरा भरोसा था, इसलिए उन्होंने खड़े होकर प्राचार्य से कहा कि वे फेल नहीं हो सकते हैं इसलिए उन्होंने प्रिंसिपल से परीक्षा में हुए उत्तीर्ण विद्यार्थियों की सूची को एक बार पुन: देख लेने का अनुरोध किया जिससे, प्रिंसिपल ने क्रोधित होकर राजेन्द्र प्रसाद से कहा कि वह फ़ेल हो गए होंगे अत: उन्हें इस मामले में तर्क नहीं करना चाहिए। वे हकलाकर घबराते हुए बोले 'लेकिन, लेकिन सर' क्रोधित प्रिंसिपल ने कहा, 'पाँच रुपया ज़ुर्माना' राजेन्द्र प्रसाद साहस कर दुबारा बोले तो प्रिंसिपल चिल्लाये और बोले 'दस रुपया ज़ुर्माना'। राजेन्द्र प्रसाद बहुत घबरा गए। अगले कुछ क्षणों में ज़ुर्माना बढ़कर 25 रुपये तक पहुँच गया। एकाएक हैड क्लर्क प्रिंसिपल से बोले कि सर एक गलती हो गई है, वास्तव में राजेन्द्र प्रसाद परीक्षा में प्रथम आए हैं। राजेन्द्र प्रसाद की छात्रवृत्ति दो वर्ष के लिए बढ़ाकर 50 रुपया प्रति मास कर दी गई। इस घटना के बाद राजेन्द्र प्रसाद ने यह जान लिया था कि आदमी को आत्मविश्वासी बनना चाहिए।

कॉलेज में राजेन्द्र बाबू का पहला दिन : सरल स्वभाव वाला सीधा-साधा ग्रामीण युवक राजेन्द्र प्रसाद बिहार पहली बार 1902 में कलकत्ता में प्रेसीडेंसी कॉलेज में प्रवेश हेतु आया था। जब राजेन्द्र प्रसाद का नाम हाजिरी के समय नहीं पुकारा गया तो उन्होनें हिम्मत जुटा कर अपने

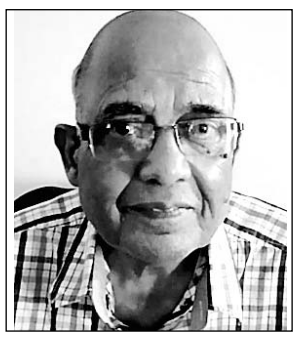

डा. जे.के.गर्ग

प्रोफेसर को पूछा कि उनका नाम क्यों नहीं लिया गया। प्रोफेसर उनके देहाती कपड़ों को घूरता ही रहा एवं चिल्ला कर बोला-ठहरो, मैंने अभी स्कूल के लड़कों की हाजिरी नहीं ली है। राजेन्द्र प्रसाद ने हठ किया कि वह प्रेसीडेंसी कॉलेज के छात्र हैं और उन्होंने प्रोफेसर को अपना नाम भी बताया। अब कक्षा के सभी छात्र उन्हें उत्सुकतावश देखने लगे क्योंकि उस वर्ष राजेन्द्र प्रसाद विश्वविद्यालय में प्रथम आये थे, प्रोफेसर ने तुरंत अपनी गलती को सुधार कर ससम्मान उनका नाम पुकारा और इस तरह राजेन्द्र प्रसाद के कॉलेज जीवन की शुरुआत हुई।

अंगेज को सिखाया पाठ : एक बार राजेंद्र बाबू नाव से अपने गांव जा रहे थे। नाव में कई लोग सवार थे। राजेंद्र बाबू के नजदीक ही एक अंग्रेज बैठा हुआ था। वह बार-बार राजेंद्र बाबू की तरफ व्यंग्य से देखता और मुस्कराने लगता। कुछ देर बाद अंग्रेज ने उन्हें तंग करने के लिए एक सिगरेट सुलगा ली और उसका धुआं जान बूझकर राजेंद्र बाबू की ओर फेंकता रहा। कुछ देर तक राजेंद्र बाबू चुप रहे लेकिन वह काफ़ी देर से उस अंग्रेज की इस हरकत को सहन नहीं पाये। उन्हें लगा कि अब उसे सबक सिखाना जरूरी है। कुछ सोचकर वह अंग्रेज से बोले, 'महोदय, यह जो सिगरेट आप पी रहे हैं क्या आपकी ही है?' यह प्रश्न सुनकर अंग्रेज व्यंग्य से मुस्कराता हुआ बोला, 'अरे, मेरी नहीं तो क्या तुम्हारी है? महंगी और विदेशी सिगरेट है।' अंग्रेज के इस वाक्य पर राजेंद्र बाबू बोले, 'बड़े गर्व से कह रहे हो कि विदेशी और महंगी सिगरेट तुम्हारी है। तो फिर इसका धुआं भी तुम्हारा ही हुआ न। उस धुएं को हम पर क्यों फेंक रहे हो? तुम्हारी सिगरेट तुम्हारी चीज है। इसलिए अपनी हर चीज संभाल कर रखो। इसका धुआं हमारी ओर नहीं आना चाहिए। अगर इस बार धुआं हमारी और आया तो सोच लेना कि तुम अपनी जुबान से ही मुकर रहे हो। तुम्हारी चीज तुम्हारे पास ही रहनी चाहिए, राजेन्द्र बाबू की बात को सुनकर बेचारा अंग्रेज सकपकाया और उसने अपनी जलती हुई सिगरेट को बुझा दिया।

राष्ट्रीय कर्तव्य ही था सर्वोच्च : भारतीय संविधान के लागू होने से एक दिन पहले 25 जनवरी 1950 को उनकी सगी बहन भगवतीदेवी का निधन हो गया, लेकिन वे भारतीय गणराज्य के स्थापना की रस्म के बाद ही दाह संस्कार में भाग लेने गये। वह वर्ष में से 150 दिन रेलगाड़ी द्वारा यात्रा करते और आमतौर पर छोटे-छोटे स्टेशनों पर रूककर सामान्य लोगों से मिलते और उनके दुख-दर्द दूर करने का प्रयास करते।

आजादी आंदोलन में शामिल होने के लिए छोड़ी वकालत : उन दिनों डॉ. राजेन्द्र प्रसाद देश के गिने चुने नामी वकीलों में गिने जाते थे। जब गांधी जी ने असहयोग आंदोलन शुरू किया तो राजेन्द्र बाबू ने वकालत छोड़ दी और अपना पूरा समय मातृभूमि की सेवा में लगाने लगे। अपने मित्र रायबहादुर हरिहर प्रसाद सिंह के मुकदमों की पैरवी के लिए उन्हें इंग्लैण्ड जाना पड़ा।

वरिष्ट बैरिस्टर अपजौन इंग्लैण्ड में हरिहर प्रसाद सिंह का मुकदमा लड़ रहे थे इन्हीं के साथ राजेन्द्र बाबू को काम करना था। एक दिन किसी ने अपजौन को कहा कि राजेंद्र बाबू भारत के सफलतम वकीलों में से हैं किन्तु उन्होंने भारत को स्वतंत्र कराने हेतु अपनी वकालत त्याग दी है। अपजौन एक दिन राजेन्द्र बाबू से बोले लोग सफलता, पद और पैसे के पीछे भागते हैं और आप हैं कि इतनी चलती हुई वकालत को आपने ठोकर मार दी। आपने गलत किया। राजेन्द्र बाबू ने जवाब दिया एक सच्चे हिंदुस्तानी को अपने देश को आजाद कराने के लिए बड़े से बड़ा त्याग करने के लिए तैयार रहना चाहिए, वकालत छोड़ना तो एक छोटी सी बात है।

राष्ट्रपति ने मांगी अपने निजी सेवक से माफी : राजेन्द्र बाबू 12 वर्षों तक राष्ट्रपति भवन में रहे। राष्ट्रपति भवन में कार्यरत कर्मचारी तुलसी से एक दिन सुबह उनके कमरे में झाड़पोंछ करते वक्त उसके हाथ से राजेन्द्र प्रसाद जी के डेस्क से एक हाथी दांत का पेन नीचे ज़मीन पर गिर गया और पेन टूट गया जिससे स्याही कालीन पर फैल गई। चुकिं यह पेन उन्हें किसी ने भेंट किया था और यह पेन उन्हें प्रिय भी था। राजेन्द्र बाबू ने अपना गुस्सा दिखाने के लिये तुलसी को तुरंत अपनी निजी सेवा से हटा दिया, उस दिन वे बहुत व्यस्त रहे, मगर सारा काम करते हुए उनके हृदय में एक कांटा चुभता रहा और वे सोचने लगे कि उन्होंने तुलसी के साथ न्याय नहीं किया है शाम को राजेन्द्र बाबू ने तुलसी को अपने कमरे में बुलाया तब तुलसी ने राष्ट्रपति को सिर झुकाए और हाथ जोड़े खड़े देखा तो वह हक्का-बक्का हो गया, राष्ट्रपति ने धीमे स्वर में कहा, 'तुलसी मुझे माफ़ कर दो।' तुलसी इतना चकित हुआ कि उससे कुछ बोला ही नहीं गया। सेवक और स्वामी दोनों की आंखों में आंसू आ गये।

3 दिसम्बर 2022 को राजेन्द्र बाबू के 138 वें जन्म दिन पर हम भारतीय उनके श्रीचरणों में श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।

डा. जे.के.गर्ग,
पूर्व संयुक्त निदेशक कालेज शिक्षा, जयपुर

एक साथ 15 मोरों की मौत

झुंझुनूं, (निसं)। फतेहसरी गांव में एक साथ 15 से अधिक मृत मोरों के मिलने से सनसनी फैल गई है। जिसके बाद सूचना पर ना केवल पशु चिकित्सा टीम,

■ **फतेहसरी गांव के सरपंच ने नवलगढ़ वन विभाग कार्यालय को सूचना दी**

बल्कि वन विभाग की टीम भी पहुंच गई है। नवलगढ़ वन विभाग के वन रक्षक संजीव कुमार ने बताया कि सुबह गांव के सरपंच ने वन विभाग को गांव में मोर के मरने की जानकारी दी। इसके बाद वनरक्षक संजीव कुमार मौके पर पहुंचे। जेजूसर रास्ते पर एक खेत की मेड के पास 15 मोर मृत मिले। इसके बाद वन विभाग की टीम की ओर से मौके पर चिकित्सा टीम को बुलाया गया। चिकित्सा टीम ने मृत मोरों का पोस्टमार्टम किया। वहीं पोस्टमार्टम के बाद वन विभाग की टीम की ओर से मृत मोरों का अंतिम संस्कार करवाया गया। वहीं मौत के कारणों की जांच की जा रही है। इसके साथ-साथ इलाके में सर्च भी चलाया जा रहा है। ताकि पास पडौस के इलाके में और कहीं भी ऐसी घटना हुई है तो उसका पता लगाया जा सके।

आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं का प्रदर्शन

हिंडौन सिटी, (कासं)। हिंडौन में ब्लॉक स्तरीय आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं ने शुक्रवार को नियमितीकरण की मांग करते हुए मुख्यमंत्री के नाम एसडीएम सुरेश कुमार हरसोलिया को ज्ञापन सौंपा।

■ **एसडीएम सुरेश कुमार हरसोलिया को मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा**

ज्ञापन देने से पूर्व आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं ने एसडीएम कार्यालय परिसर में नारेबाजी करते हुए प्रदर्शन किया। आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं में शशि जाटव, कमलेश, सावित्री गुप्ता ने बताया कि राज्य सरकार से विभिन्न मांगों को लेकर एसडीएम को ज्ञापन दिया गया। जिसमें मुख्य मांग आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को सरकारी कर्मचारी के रूप में नियमित करने सहित, केंद्र संचालन के लिए सरकारी भवन व सरकारी स्कूल में संचालन करने, रिटायरमेंट फंड बनाने, पेंशन सुविधा, ग्रीष्मकालीन व शीतकालीन अवकाश सुविधा दिए जाने की मांग है। साथ ही 1 दिसंबर से शुरू हुए हड़ताल को अनिश्चतकालीन अवधि तक जारी रखने की बात कही गई। ब्लॉक क्षेत्र की आंगनबाडी कार्यकर्ताओं ने एक बैठक भी आयोजित की।

जिसके बाद प्रदर्शन कर ज्ञापन देने का सामूहिक निर्णय लिया। ज्ञापन देने के दौरान माया सिंघल, गीता गुर्जर, सावित्री जाट, प्रीतम बाई, सुशीला सहित काफी संख्या में आंगनबाड़ी कार्यकर्ता मौजूद रही।

भरतपुर के न्यू मथुरा गेट उच्च प्राथमिक स्कूल में कलेक्टर बने शिक्षक

भरतपुर, (निसं)। जिला कलेक्टर आलोक रंजन ठीक जिला कलेक्ट्रेट के समक्ष स्थित राजकीय न्यू मथुरा गेट उच्च प्राथमिक विद्यालय के औचक निरीक्षण पर पहुंचे। जहां उन्हें राज्यमंत्री डॉ. सुभाष गर्ग के गृह क्षेत्र के राजकीय विद्यालयों में मूलभूत सुविधाओं के साथ-साथ शिक्षा के स्तर में भी जमकर लापरवाही सामने आई। कलेक्टर व्की जांच के दौरान स्कूल के बच्चे जिला कलेक्टर के सवालों का जवाब नहीं दे पाए। जिला कलेक्टर आलोक रंजन के सवाल पर स्कूल के बच्चे अपने अध्यापकों के तरफ तकते नजर आए। इस मामले में जब जानकारी जुटाई तो पता चला कि स्कूल में आठ कक्षाओं पर 6 शिक्षिकाएं कार्यरत हैं। जिनमें से एक शिक्षिका पीटीआई के पद पर कार्यरत है। हालांकि पढाई का जिम्मा एसटीसी एवं बीएड कर रहे इटर्नशिप के जिम्मे रहता है। जिनका सारा ध्यान अपनी कंपटीशन की तैयारी पर रहता है। ऐसे में विद्यालय के बच्चों के शिक्षा पर किसी का ध्यान नहीं है।

कलेक्टर आलोक रंजन ने न्यू मथुरा गेट उच्च प्राथमिक विद्यालय का औचक निरीक्षण किया।

जिला शिक्षा अधिकारी के निरीक्षण के बाद स्कूल अपने पुराने ढर्रे पर आ जाते हैं। जिला कलेक्टर आलोक रंजन स्कूल के पास ही भीम वॉल का शुभारंभ करने आए थे। ऐसे में अचानक स्कूल में पहुंच गए। जहां वह पहले कक्षा 3 में पहुंचे जहां बीएड स्टूडेन्ट छात्र छात्राओं की क्लास ले रही थी।

■ **कलेक्टर ने नगर निगम आयुक्त अखिलेश को स्कूल का फर्श और रंग रोगन कराने के निर्देश दिए**

उनकी कमियों पर जिला कलेक्टर ने समझाया कि ब्लैक बोर्ड पर बच्चों को सही तरीके से हैण्ड राइटिंग में लिखें जिससे बच्चे पढ सके एवं लिख सकें। इसी दौरान जिला कलेक्टर ने बोर्ड पर लिखकर के समझाया भी। जिला कलेक्टर आलोक रंजन ने इस दौरान शिक्षक का रोल अदा किया।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

शनिवार 3 दिसम्बर, 2022

मार्गशीष मास, शुक्ल पक्ष, एकादशी तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2079, रेवती नक्षत्र रविवार प्रात: 6:16 तक, व्यतिपात योग रात्रि 4:34 तक, वणिज करण सांय 5:37 तक, चन्द्रमा आज मीन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-वृश्चिक, चन्द्रमा-मीन, मंगल-वृष, बुध-धनु, गुरू-मीन, शुक्र-वृश्चिक, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

रवियोग रविवार प्रात: 6:16 तक बना रहेगा। भद्रा सांय 5:37 से रविवार प्रात: 5:35 तक रहेगी। आज मोक्षदा एकादशी व्रत स्मार्तो है और गीता जयन्ती, मौनी एकादशी (जैन), व्यतिपात पुण्य है। पंचक रविवार प्रात: 6:16 पर समाप्त होंगे।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 8:22 से 9:40 तक, चर 12:16 से 1:34 तक, लाभ-अमृत 1:34 से 4:11 तक।

राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 7:04, सूर्यास्त 5:29

मेष
धार्मिक कार्यों पर धन खर्च हो सकता है। घर-गृहस्थी के खर्चों के कारण भागदौड़ रहेगी। आवश्यक कार्यों के कारण बाहर जाना पड़ सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा।

वृष
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी और नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

कर्क
धार्मिक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा। धार्मिक कार्यों में आस्था बढ़ेगी। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी और आय में वृद्धि होगी।

सिंह
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ने का भय बना रहेगा। स्वास्थ्य संबंधित परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

कन्या
व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य में उचित सफलता मिलेगी। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

तुला
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में नवीन संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त कार्य व्यवस्थित होने लगेंगे।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

धनु
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मीन
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। मन:स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में शुभ कार्य के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।